ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

22-08-2026

ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए। जमा करने की विधि है -मन्सा, वाचा, कर्मणा पवित्रता। फाउन्डेशन पवित्रता है। सेवा में सफलता का आधार भी पवित्रता है। संकल्प वा बोल में और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता हो।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

In order to experience the natural inheritance of Brahmin life, which is constant happiness, being an embodiment of peace and having contentment of the mind, you have to have purity of your mind. The way to accumulate this is to have purity in your thoughts, words and actions. The foundation is purity. The basis of success in service is also purity. Let there not be any other feelings mixed in your thoughts or words. Let there be purity in your intentions and also in your feelings.